July-September 2019

Sanginee संगिनी

Smile... Stride... Scintillate

NALCO MAHILA SAMITI

From the EditOr's Pen

> My dreams are the texture of the earth
> Softened by the monsoon a clairvoyant fragrance rises
> From the green sprouts pushing their way
> through out and through in
> **- Rabindranath Tagore**

Dear Readers

A scary Fani symbolically left an everlasting sorrow amidst an aching emptiness with a lesson to arise, to sustain, to survive, to love and to share to restart.

No doubt it was spooky. But once the jolt was over a new dawn beckoned us with a bundle of promises and aspirations. With unstinted faith and relentless endeavour we the common people joined hands to rebuild out of debris and stand strong to transform the ruin to 'win'. Restoration of uprooted trees and cleaning of the destroyed trees and plants collectively ushered in a new phase for the green movement campaign. NALCO Mahila Samiti in tandem with NALCO, especially NALCO Foundation started rekindling social leadership by spreading warmth of life through philanthrophic activities. It was a challenge to catch up with the really needy and devastated, hungry and aggressive people who were awaiting distribution of relief material for their existence. But it was a compounded pleasure to see smile on their face when they received groceries, provisions, clothes and more importantly water, milk and biscuit, bread for the children and candles and match box to dispel darkness. Kudos to NALCO for its endeavour in creating a value-chain by connecting people and re-establishing life to normalcy with its motto risk...rescue...rehabilitate...recreate and refill life with sustainable approach. The members of the NALCO MAHILA SAMITI can never forget the hours spent in Leprosy Colony at Janla, Jatni where no footstep reached to extend a helping hand. For the inhabitants of the Leprosy colonies it was like getting moon in one's hands. They couldn't believe that we can sit beside them and shoulder to shoulder strengthen them in their woe stricken life bereaved specially at the hard hit time of cyclone when no one has approached them to find out whether they were dead or alive in utter darkness and scarcity of minimum requirement of life. Accolades to Subash Roy and his team and Mrs. Sasmita and Sabita for giving a great feeling to the Leprosy Colony inhabitants.

They embraced all.

They were mixed with the multitude

And they were not alone.

Monsoon of love has revoked a new lease of life. nature has paved the way. Newly sprouting plants are peeping to experience the rain and the NALCONIANS especially the members of NMS have joined their hands to resurge a new green world by massive tree plantation.

Amidst all these there is tear in the form of raindrops to say “good bye for ever” to Mrs. Sheela Dixit and Mrs. Sushma Swaraj the real epitome of Women Empowerment let us walk on the path blazed by them towards positivity & progress.

आइए, सावन के इंद्रधनुषी रंगों से ज़िंदेगी को रंगीन बनाएँ
एवं आपसी सदभाव व भाईचारा फैलाएँ।

Preeti Roy Chand

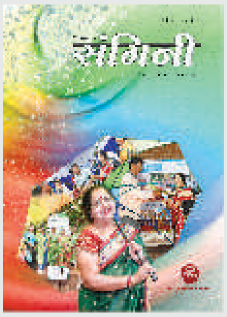

Editor in Chief
Preeti Roy Chand

Editorial Board
Poonam Thakur
Shagufta Jabeen
Debjani Mishra

Co-ordinator
Sabita Patnaik

Design Concept
Aswini Sutar

संगिनी CREATIVE CORNER

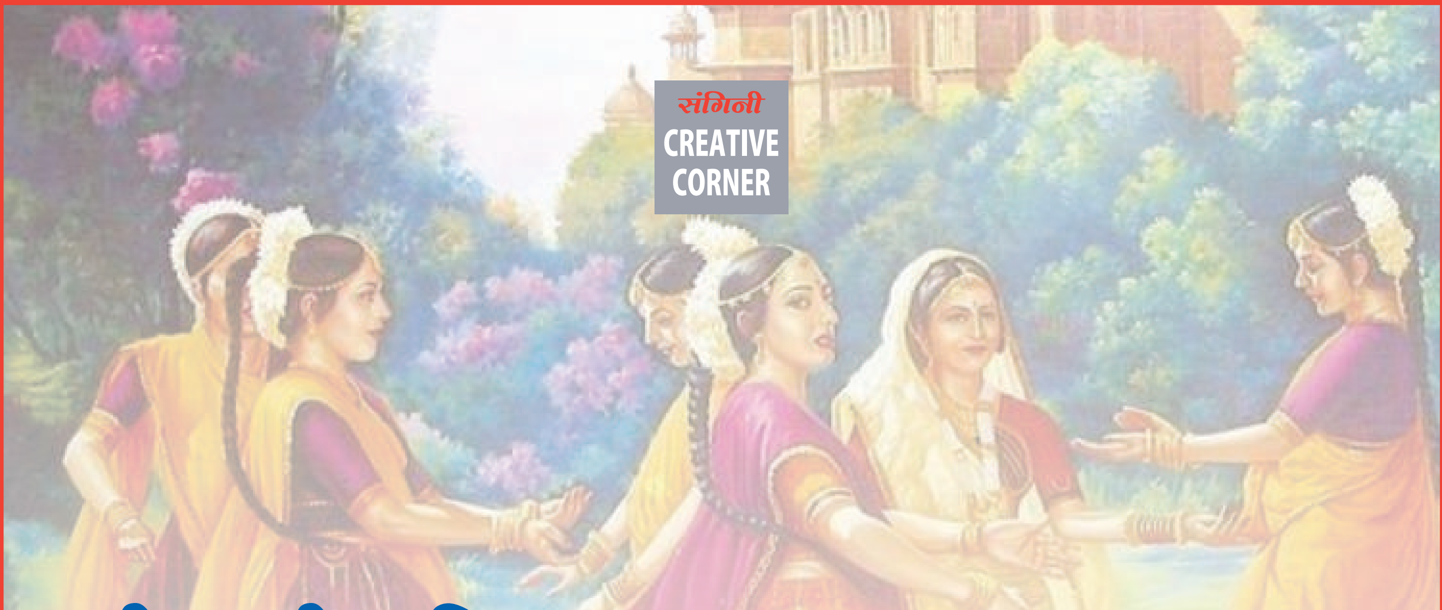

तीज की कविता

हरियाली तीज...
हल्की-हल्की फुहार है
ये सावन की बहार है
संग यारों के झूलें आओ
आज तीज का त्योहार है।
झूम उठते हैं दिल सभी के
इसके गीतों के तराने से
जुड़ जाते हैं टूटे सम्पर्क
बस झूलने के बहाने से।

इस तीज के पावन मौके पर
मिलकर झूला झूलें आओ
एक दूजे के सहयोग से
आसमान को छूते जाओ।
गुझिया खाओ, घेवर खाओ
जितने चाहो मेवा खाओ
पर छोटे-बड़ों के लिये हमेशा
दिल में रखो सेवा भाव।

एक जुट होकर आओ सारे
एक ही सुर में गाओ सारे
यही कहते हैं संस्कार हमारे
मिल जुलकर तीज मनाओ सारे ।।

सस्मिता पात्र

दौरे ज़माँ

चीख-चिल्लाहट भरी आवाज़ है
क्या तबियत आपकी नासाज़ है
आसमानों में कमी सुर-ताल की
पर हमारी ये ज़मीं पुरसाज़ है
सिसकियों में खोजना अंज़ाम क्यों

लो, नए दिन का हुआ आगाज़ है
आह यों भरना नहीं जँचता, अजी!
आप पर दौर-ए-ज़माँ को नाज है
अब जरा 'चेतस' को चुप करवाइए
हरकतों से वो न आता बाज़ है

आर्यमन 'चेतस'
सम्भाषा, भुवनेश्वर

पापा

मुझे नहीं मालूम
कैसा होता है छत बनना
नहीं पता कि पता कैसे ठीक रखें
मैंने शायद ही सोचा हो
कि आसमान के बेहतरीन सितारे
कैसे सबके लिए चुना जाए
और कैसे फिक्र में सबकी
खुद को भुला दिया जाए।
मैंने ये बस देखा है
आपके माथे की शिकन में
थककर भी मुस्कुराते मन में।
कैसे तो आपकी नींद जैसे
भाप सी उड़ जाती है,
जब मेरी साँसें थोड़ी तेज होती हैं।
आप कैसे जान जाते हो
मेरी परेशानियाँ ?
झगड़ कर, लड़ कर भी,
झेलते हो मेरी मनमानियाँ।
ना शब्द हैं, ना कोई तोहफा
बस है तो बहुत-सा प्यार।
अपने सपनों को पूरा करके भी,
उठाऊँगी आप सब का भार।

स्वेता मिश्रा
सम्भाषा

सुनहरे सपने

लोगों को सूरज की किरणें दिखती हैं
वो किरणें जो आसमान से नीचे
हर रोज इस आँगन में आती हैं
ये आँगन जहाँ की बच्चियाँ पढ़ने नहीं जा पाती
जहाँ रात में तनिक भी रोशनी नहीं आ पाती
जहाँ जिंदगी में सिर्फ अँधेरा रहता है
जहाँ पड़ा हर पत्ता एक दुखद कहानी कहता है
और इस आँगन में जब ये धूप की किरण गिरती है
तो हर कोई इस किरण को दुहाई देता है
और इन बच्चियों को बधाई देता है
कि देखो इस किरण ने अँधेरा मिटा दिया
हर सोई हुई जिंदगी को जगा दिया
इस किरण का उपकार है इस आंगन पे
जो इसने इसे रोशन कर सजा दिया।
पर जो कहानी लोगों को नहीं दिखती वो ये
कि हर रात वो बच्चियाँ एक चिराग जलाती हैं
सड़क, और दुकानों से भीख में मिले
उन किताबों के कतरों को जोड़ती हैं
और कुछ सुनहरे सपने सजाती हैं

मैं तो जो देखता हूँ
ये किरणें हर सुबह इस आँगन में
खुद रोशन होने आती हैं
और इन बच्चियों को छू कर
सूरज को आग पहुँचाती हैं।
वो आग जो इनके सपने बन
इनके दिल और दिमाग में जल रही है
और दे रही है ऊष्मा पूरे आँगन को, पूरे संसार को
जिससे रोशन हो रहे हैं बाकी के आंगन और खुद सूर्य

- उत्कर्ष जैन, सम्भाषा

तूफान

“हेलो पापा, सुनाई दे रहा है... कैसे हैं आपलोग.. ?”

“हाँ हेलो बेटा.... हम ठीक हैं... बस थोड़ी सी घबराहट हो रही है”

“हेलो...हेलो... पापा आपकी आवाज ठीक से नहीं आ रही है... क्या करुँ पापा... यहाँ की कमाई में ३ लोगों से ज्यादा के परिवार का खर्च उठाना बहुत मुश्किल है... आजकल तो अमेरिकी सरकार ने नियम भी बड़े सख्त कर दिए हैं... वरना मैं जरूर आपलोगों को अपने पास ही ले आता...”

“कोई बात नही बेटा....”

“पर मुझे आपलोगों की फिक्र हो रही है... यहाँ न्यूज में देख कर तूफान का अंदाजा लगा सकता हूँ मैं...पर मजबूर हूँ...हेलो...हेलो... हेलो... पापा... आवाज जा रही है.. ?”

“बेटा तूफान के कारण शायद नेटवर्क ठीक से काम नही कर रहा... बाद में बात करते हैं... हेलो...हेलो...”

शर्मा जी ने धीरे से मोबाइल नीचे रख दिया और पत्नी की बात सुनने के लिए कुर्सी से उठकर रसोई की तरफ चल दिये...

“देखो मैंने कल ही तुम्हें कहा था ना कि मुझे किसी अनिष्ट की आशंका हो रही है... गैस खत्म हो गई और लिट्टू भी गाँव चला गया है... मुझे तो पूरा शक है कि तूफान का सोच के ही झूठ बोलकर वह अपने गाँव चला गया है। तुमसे भी कितनी बार कहा था कि दूसरा कनेक्शन ले लो, मगर अच्छे पड़ोसियों के सहारे काम चल जाने से तुम निश्चिंत हो जाते हो...”

“अरी भागवान..हर समय बक बक मत किया कर...अब मेरी उम्र नहीं रही कि मैं जाकर ऑफिस में लाइन में लग कर नया कनेक्शन लूँ...”

“तो तुम ही मुझे बताओ कि खाओगे क्या... बिना चूल्हे के तुम्हारे लिए नरम खिचड़ी या दलिया कुछ भी नही बन सकता... केले भी खत्म हो चुके... पास की दुकान से केले तो ला सकते थे... मगर ये कहकर टाल गए के लिट्टू आएगा तो मँगा लेंगे....अब बिना दाँत के रखो उपवास...”

शर्मा जी श्रीमती जी की बातें चुपचाप सुन रहे थे... कहते भी क्या कि अब उन्हें चलने में तकलीफ होती है... रह रह कर चक्कर आते हैं और आँखों के आगे अँधेरा छा जाता है। डॉक्टर ने पिछली बार ही कहा था कि हार्ट में पेस-मेकर लगवाना पड़ेगा..वो ये बात यह सोचकर छिपा गए कि अगली बार बेटे के आने पर लगवा ही लेंगे.. तब तक का समय किसी तरह खींच लेंगे।

“ओ माँ...!! अजी सुनते हो जरा इधर तो आओ... देखो सारे आम और कटहल के फल कैसे गिर गए हैं..ये तूफान तो बढ़ता ही जा रहा है...”

पर शर्मा जी के मन में तो जैसे अपने जीवन के फिल्म की रील तेजी से उल्टी दिशा में चलती चली जा रही थी... उन्हें याद आ रहा था कि किस कठिनाई से उन्होंने एक-एक पैसे जमा करके इस घर के लिए जमीन ली थी... अपना पेट काटकर गाड़ी की किश्तें जमा की थीं ताकि बेटे सूरज को स्कूल की वैन में धक्के खाते हुए जानवरों की तरह ठूँस कर न बैठना पड़े... शहर के सबसे अच्छे स्कूल में सूरज को

पढ़ाने की मंशा भी यही थी कि एक दिन वो कामयाब हो जिन्दगी में कुछ बन जाये... कितनी आशाएँ थी उन्हें... सब बातें एक एक कर याद आ रही थीं...।

"हाय राम...." पत्नी जी जोरों से चिल्लाई...!!

शर्मा जी जबतक उठ कर उस तरफ जाते कि उससे पहले ही पानी के छींटे खिड़की का शीशा तोड़ कर अंदर आने लगे थे... रसोई के डब्बे वगैरह सब हवा से नीचे गिरने लगे थे... तभी एक बड़ा सा काँच का टुकड़ा आकर श्रीमती जी के पैर पर गिरा और उनके पैर से जोरों का खून बहने लगा...। किसी तरह पैर को घसीटते हुए वे डाइनिंग टेबल पर आकर बैठ गयी। रुई के साथ पट्टी बाँधने की शर्म जी की कोशिश नाकाम हो गई। वो शायद इसलिए कि उन्हें खून न रुकने की बीमारी थी... उन्हें फौरन ही मेडिकल सहायता की जरूरत थी...। शर्मा जी ने फौरन अपना मोबाइल उठाकर पड़ोसी का नंबर डायल करना चाहा... पर ये क्या, नेटवर्क तो पूरा चला गया था...!! अब बाहर पड़ोसी के घर तक जाकर आवाज देने के अलावा कोई चारा न था। हिम्मत करके उन्होंने बाहर जाने के लिए कदम उठाया। जैसे ही उन्होंने दरवाजा खोला वो धाड़ की आवाज से फिर बंद हो गया। शुक्र था कि उनकी उँगलियाँ बच गईं। हिम्मत न हारते हुए उन्होंने फिर से दरवाजा खोला और बाहर निकलने की कोशिश की। बाहर निकले ही थे कि उनका सर जोर से चकराया और आँखों के सामने अँधेरा छा गया। तभी बारिश के छीटों और तूफानी हवा ने उनकी तंद्रा तोड़ दी। किसी तरह खुद को संभालते हुए वो वहीं रखी कुर्सी पर बैठ गए। फिर से उठने की हिम्मत वो बटोर ही रहे थे कि अचानक जोरों की आवाज के साथ ४० साल पुराना नीम का पेड़ जड़ से उखड़कर घर की गेट के सामने गिर गया और बाहर जाने का रास्ता बंद कर गया। हताशा और निराशा के कारण उनपर जैसे बेहोशी छाने लगी। ये पेड़ उन्होंने अपने हाथों से लगाया था। ४० साल

पुरानी बातें फिर फिल्म रील की तरह चलने लगीं...

"पापा... ये पेल आप क्यों लगा लहे हो?..." सूरज ने अपनी तुतली आवाज में पूछा था।

"बेटे, यह पेड़ यहाँ की हवा साफ करेगा ताकि बुढ़ापे में हम बीमार न हों..."

"पल मैं तो हूँ न पापा... मैं आपका औल मम्मा का खयाल लखूँगा...!!"

बारिश की बूंदें शर्मा जी के आँसुओं का आलिंगन करती हुई उनके चेहरे की झुर्रियों के ऊपर से फिसलती हुई बह रही थीं और उनकी निस्तेज आँखें ये अंदाजा लगाने की कोशिश कर रही थीं कि बाहर और भीतर के तूफानों में से किसकी भयावहता अधिक थी...!!

शगुफ़्ता जबीं
भुवनेश्वर

पर्यावरण का करो सम्मान

प्रदूषण शब्द का अर्थ होता है चीजों को गन्दा करना। वर्तमान में हम खतरनाक रूप से पर्यावरण प्रदूषण की समस्या से घिरे हुए हैं। और यह समस्या भविष्य में हमारे लिये जानलेवा भी हो सकती है। इस भयंकर सामाजिक समस्या का मुख्य कारण हैं औद्योगीकरण, वनों की कटाई और शहरीकरण। प्राकृतिक संसाधन को गन्दा करने वाले उत्पाद, जो कि सामान्य जीवन की दैनिक जरूरतों के रूप इस्तेमाल किए जाते हैं।

हमारे पूरे ब्रह्माण्ड में केवल पृथ्वी ही एक ऐसा ग्रह है जहाँ जिंदगी के सभी संसाधन उपलब्ध हैं। इस ग्रह ने हमें जिंदगी दी और हमने इस ग्रह को प्रदूषित किया। इस से तो बेहतर है कि हम इस ग्रह को बदलने की कोशिश ही न करें। हम दशकों से पृथ्वी को प्रदूषित कर रहे हैं। सभी इसी ग्रह पर रहते हैं इसीलिये हमारी यह जवाबदेही है कि हम इसे स्वस्थ और प्रदूषणरहित रखें। लेकिन हम अपने दैनिक कामों का चलते इतने व्यस्त हो गये कि हम अपनी जिम्मेदारियों को ही भूल गये। साफ पानी और शुद्ध हवा हमारी स्वस्थ जिंदगी के लिये बहुत जरूरी हैं। लेकिन आज के युग में इन दो में एक भी संसाधन साफ और शुद्ध नहीं। अगर ऐसा ही चलता रहा तो आनेवाले सालों में इस ग्रह में कोई जिंदगी नहीं रहेगी।

प्रदूषण के दुष्प्रभावों के बारे में विचार करें तो ये बड़े गंभीर नजर आते हैं। प्रदूषित वायु में साँस लेने से फेफड़ों और श्वास-संबंधी अनेक रोग उत्पन्न होते हैं। प्रदूषित जल पीने से पेट संबंधी रोग फैलते हैं। गंदा जल, जल में रहने वाले जीवों के लिये भी बहुत हानिकारक होता है। ध्वनि प्रदूषण मानसिक तनाव उत्पन्न करता है। इससे बहरापन, चिंता, अशांति जैसी समस्याओं से गुजरना पड़ता है।

आधुनिक वैज्ञानिक युग में प्रदूषण को पूरी तरह समाप्त करना टेढ़ी खीर हो गई है। अनेक प्रकार के सरकारी और गैर-सरकारी प्रयास अब तक नाकाम सिद्ध हुए है। हर एक को ये सोचना चाहिये कि वे आस-पास कूड़े का ढेर व गंदगी इकट्ठा न होने दें। जलाशयों में प्रदूषित जल का शुद्धिकरण होना चाहिये। कोयला तथा पेट्रोलियम पदार्थों का प्रयोग घटाकर सौर-ऊर्जा, सी.एन.जी., पवन-ऊर्जा, बायो गैस, एल.पी.जी., जल-विद्युत जैसे वैकल्पिक ऊर्जा स्त्रोतों का अधिकाधिक उपयोग करना चाहिये। इन सभी उपायों को अपनाने से वायु प्रदूषण और जल प्रदूषण को घटाने में काफी मदद मिलेगी।

ध्वनि प्रदूषण को कम करने के लिये कुछ ठोस एवं सकारात्मक कदम उठाने की आवश्यकता है। रेडियो, टीवी, ध्वनि विस्तारक यंत्रों आदि को कम आवाज में बजाना चाहिये। लाउडस्पीकरों के आम उपयोग को प्रतिबंधित कर देना चाहिये। वाहनों में हल्की आवाज करने वाले ध्वनि-संकेतकों का प्रयोग करना चाहिये। घरेलू उपकरणों को इस तरह प्रयोग में लाना चाहिये जिसमे कम से कम ध्वनि उत्पन्न हो।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि प्रदूषण को कम करने का एकमात्र उपाय सामाजिक जागरुकता है। प्रचार माध्यमों के द्वारा इस संबंध में लोगों तक संदेश पहुँचाने की आवश्यकता है। सामूहिक प्रयास से ही प्रदूषण की विश्वव्यापी समस्या को नियंत्रित किया जा सकता है। इससे गंभीरता से निपटने की जरूरत है, अन्यथा हमारी आने वाली पीढ़ी बहुत ज्यादा भुगतेगी।

आज इस अच्छी चीजों में पैसे खर्च करने की बजाय पर्यावरण को प्रदूषित करने वाली चीजो में पैसे खर्च करने लगे हैं। प्रदूषण से होने वाली बीमारियों से बचने के लिये हमें प्रदूषण रहित पानी पीना चाहिये, स्वस्थ भोजन करना चाहिये, सुबह की ताजा हवा लेनी चाहिये और कभी भी ध्वनि प्रदूषण नहीं करना चाहिये. हम में से आजकल ज्यादातर लोग फल, हरी सब्जियाँ खरीदने में पैसे खर्च करने की बजाय दवाइयाँ लेने में पैसे खर्च करने लगे हैं। हमेशा याद रखें, जबतक हम स्वयं प्रदूषण की रोकथाम के लिये कोई कदम नहीं उठाते, तबतक हम इस समस्या को दूर नहीं कर सकते.

सीमा सिंह

नालको महिला समिति, अनुगुल

The Origin of Lord Jagannath's Tradition

Lina Mohapatra

Traditions and practices followed in the Jagannath Temple indicate that the supreme God of the universe, Lord Jagannath is of tribal origin. Sabar tradition, in the culture of Lord Jagannath, has its connection with the legend of Raja Indradyumna, the ruler of the city of Malay.

One day, the king came to know that Vishnu in flesh and blood was present in the Blue Mountain in Udra Desh. That is the place where the Sabar chief named Vishwabasu was worshipping Nilamadhaba. The king deputed his Brahmin priest, Vidyapati, to Udra Desh to collect information about Lord Vishnu. After coming to Udra Desh, Vidyapati took shelter in the Sabar village. There he fell in love with a beautiful Sabar maiden named Lalita, the only daughter of Vishwabasu and married her. Pestered by the constant requests of his son-in-law, Vishwabasu took Vidyapati to meet the Lord by putting a cover on his eyes. However, Vidyapati cunningly threw mustard seeds on his way to mark the road.

When King Indradyumna came to know about it, he came immediately to meet the Lord. But when he reached the place, he was told that the Lord was no more there. In the same night, the king had been asked to find the Lord at daru and worship the deity at Purushottam Puri.

The king started looking for daru, which he found near Mahodhadi (seashore). He then appointed an old carpenter to carve the idols of the Lord from daru. The carpenter agreed to it on a condition, that he should not be disturbed for 21 days during which he would be able to complete the idols. However, after 15 days, the king became impatient. He could not hear any sound from the closed room. Being Curious, he opened the door. To his surprise he found half built idols of Lord Jagannath, Balabhadra, Subhadra and Sudarshana. The idols did not have their hands and feet carved out and the carpenter too had vanished. However, the Lord continues to be worshipped till date in that form only. His festival, Rath Yatra also known as the Car Festival or Chariot Festival is celebrated all over the world with equal devotion and joy.

The culture of Odisha is full of historical achievements and glory. Sadly, we never think about it deeply or talk about it in the global stage. Deep thought & reflection on our culture will also teach us many values such as devotion to God, trust, faith and sacrifice. These values hold a lot of importance in this materialistic world to live peacefully and happily.

କୋଣାର୍କ

ଟି. ଜଗଦିଶ୍ୱରୀ

ଭାସ୍କର୍ଯ୍ୟ ଭାସ ଭୁଜ ଭୂଷିତ କରି
ହସ୍ତର ପ୍ରଜ୍ଞାର ପ୍ରଜାଗୃତ ପ୍ରହରୀ
ଅତିକ୍ରମ ପଥେ ଶତ ଶତାବ୍ଦୀ-ଅବ୍ଦ;
ଉତ୍କଳର ଉଷ୍ଣରକ୍ତ ପ୍ରବାହଧାରୀ
ଧରମାର ଅନ୍ୱୟ କଳାକାରିଗରୀ
ବଖାଣି ଗାଏ କୋଣାର୍କର ପ୍ରତି ଶିଳାଶବ୍ଦ ॥୧॥

ବାର ବରଷର ତପସ୍ୟା ବଳେ
ଉତ୍କଳର ସଂସ୍କୃତି ସୌଧ କୋଳେ
ଉଙ୍କି ମାରିଲା କୋଣାର୍କ କୀରତି;
ବାରଶହ ଶିଳ୍ପୀ ସମର୍ପିତ ସ୍ୱପ୍ନ ତୁଠରେ
ବେଦନା ବିବ୍ରତ ନିହାଣ ଚୋଟରେ
ମୁରକି ହସୁଛି ମୈଥୁନ ମୂରତୀ ॥୨॥

ଲାଙ୍ଗୁଳା ଲୀଳା ତୋଳିଲା ଅକ୍ଷୟ କଳା
ଲାଳିତ୍ୟ ଲାସିକାର ଲାସ୍ୟମାଳା
ଲୁବ୍ଧକରେ କମଳ ଲୋଚନ;
ଲହୁଲି ଲାଳସାର ଲାବଣ୍ୟ ଲିପି
ଲସିକା ଲହରୀ ବନ୍ଧେ ଲୋତକ ଚାପି
ପ୍ରସ୍ତର, ପ୍ରଦତ୍ତ, ଦେହେ ସଂଚାରେ ଜୀବନ ॥୩॥

ସ୍ୱର୍ଣ୍ଣିମ ସିକତେ କନ୍ଦୁକ କ୍ରୀଡ଼ାରତ
ଚାରୁଚନ୍ଦ୍ରଭାଗା କୋଳେ ଭାସ୍କର ବିମୋହିତ
କନ୍ଦର୍ପର କାୟା ବିସ୍ତାର କାଳେ;
ସମ୍ମୋହିତ ସୂର୍ଯ୍ୟର ଅନୁଧାବନ
ବିରାଗ ଚନ୍ଦ୍ରଭାଗାର ସାଗରଲୀନ
ସୁମନ୍ୟ ଶ୍ରାପ ଭଗ୍ନ ମଣ୍ଡପ ତୋଳେ ॥୪॥

ଶିକ୍ଷୟିତ୍ରୀ
ସରକାରୀ ଉଚ୍ଚ ବିଦ୍ୟାଳୟ, ଚାଟୁଆ

ଓଡ଼ିଶାର ଶ୍ରେଷ୍ଠ ପର୍ବ
ରଥଯାତ୍ରା

ଶିଖା ନାୟକ

ଶ୍ରୀମନ୍ଦିର ଶୀର୍ଷେ
ଉଡୁଛି ହରଷେ
ପ୍ରଭୁଙ୍କ ଦର୍ଶନେ ନେତ,
ମହାପ୍ରଭୁ ଆଜି
ହୋଇଛନ୍ତି ବିଜେ
ଦେଖିବେ ବୋଲି ଭକତ।
ଭକ୍ତର ଭଗବାନ
ସମ୍ପର୍କ ଅସୀମ
ଭକ୍ତ ଆସିଥାନ୍ତି ମାଡ଼ି
କାଳେ କୋଉ ଭକ୍ତ
ନ ରହୁ ବଞ୍ଚିତ
ଧୀରେ ଧୀରେ ରଥ ଯାଉଛି ଗଡ଼ି ।

ଭକ୍ତ ଭକ୍ତି ଭାବେ
ନଡ଼ିଆ ଯେ ଯାଚେ,
କିଏ ଦୂରୁ ନମସ୍କାର
ତୋ ଚକା ଆଖିରେ
ଦେଖୁ ଆନନ୍ଦରେ ।
ରଥପୁରୁ ଭକ୍ତ ତୋର
ତୋ ଆଗରେ କେହି
ବଡ଼ ହୁଏ ନାହିଁ
ହୁଏ ନାହିଁ କେହି ସାନ,
ଦୁନିଆରେ ବଡ଼ ଏକା ତୁହି
ରାଜାଠୁ ସିପାହୀ
ତୋ ଆଗେ ସବୁ ସମାନ ।

ଅନୁଗୋଳ

ସ୍ୱପ୍ନ
ଏକ ଅମରାବତୀର

ମମତା ପାଣିଗ୍ରାହୀ

ଅମରାବତୀ ସମ ସୁରମ୍ୟ ଉପତ୍ୟକାରେ
ଝଲସୁଥିଲେ ବୃକ୍ଷରାଜି ଆଦିତ୍ୟଙ୍କର କିରଣରେ...
କାକଳୀର କୁହୁ ସ୍ୱନ
ମଳୟର ମଳ ମଳ ସମୀରଣ
ଡୋଳୁଥିଲା ପରିବେଶ ସମ୍ମୋହନର....
ବୁଣି ହେଇ ଯାଉଥିଲା ଇନ୍ଦ୍ରଧନୁର ସାତରଙ୍ଗ ।

ପାରିଜାତର ସୁଗନ୍ଧରେ
ଅଳକାପୁରବାସୀଙ୍କର ଶ୍ରଦ୍ଧା-ସୁମନରେ
ବିସୂରି ଯାଉଥିଲି ଉମା ଅସ୍ତିତ୍ୱକୁ
ଉଡ଼ି ବୁଲୁଥିଲି ଡେଣା ମେଲି
ସାଥୀଙ୍କ ସହ ପରୀଙ୍କ ଭଳି... ।

ଶୁଭ୍ର ବାଦଲର ଶୀତଳ କୋମଳ ସ୍ପର୍ଷରେ
ବୁନ୍ଦା ବୁନ୍ଦା ଅମୃତସମ ବାରି ଧାରାରେ
ସାଉଁଟି ନେଉଥିଲି ଯେତେ ସବୁ
ମଧୁର ମୁହୂର୍ତ୍ତକୁ ଆଞ୍ଜୁଳା ଆଞ୍ଜୁଳା କରି
ସାଇତି ରଖୁଥିଲି ସେ ସବୁକୁ ସ୍ମୃତିର ପେଡ଼ିରେ ।

ଢାଳି ହୋଇ ଯାଉଥିଲା ସ୍ନେହ ଶ୍ରଦ୍ଧା ସବୁ
ଧନ୍ୟ ଧନ୍ୟ ମନେ ହେଉଥିଲା ଜୀବନଟା
ସାର୍ଥକ ଲାଗୁଥିଲା ଜନ୍ମଟା ।

କିନ୍ତୁ... ଏ ... କଅଣ... ? ?
ଅପସରି ଗଲା ଯେ ଇନ୍ଦ୍ରଜାଲର
ଝିଲ୍‌ମିଲ୍ ପରଦା..
ଅଦୃଶ୍ୟ ହୋଇଗଲା ଘନତ୍ୱ
ପରସ୍ତ ପରସ୍ତ ଶୁଭ୍ର ବାଦଲର
ମିଳେଇଗଲା ମନମୋହକ ସୁଗନ୍ଧ
ସେଇ ଦିବ୍ୟ ପାରିଜାତରେ ।

ମୁକ୍ତି

ଶ୍ରୀଧର ପରିଡ଼ା

ଦେଇପାରିବିକି ତୁମକୁ ଚିମୁଟାଏ ପ୍ରତିଶୃତି,
ତମକଥା ଆଉ ଥରୁଟିଏ ଭାବିବିନି ବୋଲି ।
ତମେ ଆଉ କେତେବେଳେ
ତମେ ହୋଇ ରହିଲ ଯେ,
ମୋ ସକଳ ସତ୍ତାରେ ତ ତୁମେ
ମୁଁ ମୟ... ମୁଁ ମୟ
ମୋ ମନରେ... ମୋ ଆତ୍ମାରେ
ମୋ ଲୁହରେ... ମୋ ପ୍ରେମରେ
ମୋ କଳ୍ପନାର ଆଉ ଏକ
ନୂଆ ଦୁନିଆଁରେ
ତୁମେ ଆଉ ତୁମେ ହୋଇ ନାହଁ ।
ଦେହ ଅଛି ଦାହ ବି ରହିବ
ଦହନର ଆଁ ଗିଳା ଅନଳରେ
ମନତଳେ ଆଶା ଜଳୁଥିବ ।
ଜଳୁଥିବି ମୁଁ ଜାଳୁ ଥିବ ତୁମେ
ରାତି ପରେ ରାତି ସରୁଥିବ ।
ବିରହର ବି ଗୋଟେ ବାସ୍ନା ଅଛି
ରାତିର ବି ଗୋଟେ ରଙ୍ଗ ଅଛି ।
ପ୍ରୀତିର ବି ଗୋଟେ ପ୍ରାପ୍ତି ଅଛି ।
ଠିକ୍ ତମ ଆଲିଙ୍ଗନର ମିଠା ବାସ୍ନାପରି
ତୁମ ଆମନ୍ତ୍ରଣର ନୀଳରଙ୍ଗ ପରି
ତୁମ କାମନାର କାକ୍‌ଟସ ପରି ।
କୁହ ଆଉ କେତେଦିନ ଜାଳୁ ଥିବ
ମୋହର ମୋହନ ମୁଁ ସମ୍ମୋହନ
ତୁମ ରାଧିକା ପଣରେ..
ତୁମ ବନ୍ଧନରେ ମୁଁ ବନ୍ଦୀ
ବନ୍ଦୀ ତୁମ ପରମ ପ୍ରେମରେ
କୁହ ତୁମେ ପାରିବ କି
ମୋ ଠାରୁ ମତେ ମୁକ୍ତ କରି
କେଉଁ ଏକ ମହାର୍ଘ ବେଳରେ...

ଦାମନଯୋଡ଼ି

ହେ ସାଆନ୍ତେ

ମମତା ଆଚାର୍ଯ୍ୟ

କଟି... କଟି... କଟି....

ବୁଝିଲ ସାଆନ୍ତେ, ଆଜିଠାରୁ ତୁମ ସାଙ୍ଗରେ ମୋର କଟି। ତୁମେ ଭାବନା ଯେ ସରଦା ଦାଦିଙ୍କ ଝିଅ ନାକକାନ୍ଦୁରୀ କୁନିକୁ କନ୍ଦେଇବାକୁ ଯାଇ ମୁଁ ଯେମିତି ମିଛିମିଛିକା କଟି ପକାଏ, ଏ ସେମିତିକା ମିଛ କଟି। ମୁଁ ସତସତିକା ତୁମ ସାଙ୍ଗରେ କଟି ପକେଇଛି। ହେଲେ ରାଗରେ ନୁହେଁ ମ ସାଆନ୍ତେ, ଅଭିମାନରେ। ମା କହେ ତୁମେ କାଳେ ଅନ୍ତର୍ଯ୍ୟାମୀ। ସବୁ କଥା ଜାଣିପାର। ଏବେ ତ ତାହାଲେ ତୁମେ ମୋ କଟି ପକେଇବାର କାରଣଟା ବି ଭଲଭାବରେ ଜାଣି ସାରିବଣି। ହଁ ସାଆନ୍ତେ, ଆଉ ଗୋଟିଏ କଥା ବି ମୁଁ ତୁମକୁ କହି ଦେଉଛି। ତୁମର ତ ଅନେକ ନାମ। ଜଗନ୍ନାଥ, ଜଗବନ୍ଧୁ, କାଳିଆ, କାହ୍ନା, ମୁରଲୀ... ଏହିପରି ଅସଂଖ୍ୟ ନାମ। ହେଲେ ମୁଁ ତୁମକୁ କାହିଁକି, ସାଆନ୍ତେ ଡାକେ। କାରଣ ମୋ ଆଦର୍ଶ, ମୋ ଗୁରୁ ମୋର ସବୁକିଛି ମୋ ବାପା ତୁମକୁ ସାଆନ୍ତେ ସାଆନ୍ତେ ବୋଲି ଡାକନ୍ତି। ସକାଳ ପହରୁ ରାତିଯାଏ ତାଙ୍କ ତୁଣ୍ଡରେ ତୁମ ନାମ। ଅନେକ ସମୟରେ ମନକୁ ମନ ତୁମ ସାଙ୍ଗରେ ଗପିବାର ବି ମୁଁ ଦେଖିଛି। ନ ଜାଣିଲା ଲୋକ ତ ଭାବିବ ଏ ଗୋଟେ ବୃଦ୍ଧ ପାଗଳ। ଦିନେ ମୁଁ ବି ସାହସ କରି ବାପାଙ୍କୁ ପଚାରି ଦେଇଥିଲି-

ବାପା ତୁମେ ତ ସାଆନ୍ତେଙ୍କ ସାଙ୍ଗେ ଏତେ ଗପୁଛ। ହେଲେ ସେ କ'ଣ ତୁମ କଥା କିଛି ଶୁଣନ୍ତି ?

ବାପା ହସଟିଏ ହସି ସେଦିନ କହିଥିଲେ- ମୋ ସାଆନ୍ତେ ପରା ବ୍ରହ୍ମାଣ୍ଡ ଗୋସେଇଁ। ସେ ଅଦୃଶ୍ୟରେ ସବୁଠି ଥାଆନ୍ତି ଆଉ ଆଦର ସହକାରେ ସମସ୍ତଙ୍କ କଥା ଶୁଣନ୍ତି।

ସେଦିନ ତାଙ୍କ କଥା ଅଧା ବୁଝିଥିଲି ଓ ଅଧା ବୁଝି ନ ଥିଲି। ଆଜି ବି ଦେଖ ଅଧା ବୁଝି ଅଧା ନ ବୁଝି ବିଶ୍ୱାସ, ଅବିଶ୍ୱାସ ଭିତରେ ତୁମ ପାଖକୁ ଧାଇଁ ଆସିଛି ମନର କଥା କହିବାକୁ। ସତ କହିଲ ସାଆନ୍ତେ- ତୁମେ ଏମିତି କାହିଁକି କଲ ?

ତମେ ତ ଜାଣିଛ ସାଆନ୍ତେ, ମୋ ବାପା କେଡ଼େ ଭଲ ମଣିଷଟିଏ। ନିଜ କାମ ଭଲ ତ ସେ ଭଲ। ଅନ୍ୟକୁ ସାହାଯ୍ୟ କରିବାକୁ ସବୁବେଳେ ଆଗୁସାର। ଗାଁ ଲୋକ କୁହନ୍ତି ମୋ ବାପା କାଳେ କୋଟିକରେ ଗୋଟିଏ। ହେଲେ ଏତେ ଭଲ ମଣିଷଟିର ଜୀବନରେ ଏଡ଼େବଡ଼ ଦୁର୍ଘଟଣାଟିଏ, କାହିଁକି ଘଟିଲା ଯେ। ତୁମେ କ'ଣ ଜାଣିନ ସାଆନ୍ତେ, ସେ ତୁମ ପାଇଁ କେମିତି ପାଗଳ। ଯେତେ ଦେହ ଅସୁଖ ଥାଉ କି ଯେତେ କାମ ଥାଉ ପ୍ରତିଦିନ ସକାଳ ସଞ୍ଜରେ ଯାଇ ତୁମ ଦେଉଳରେ ଘଣ୍ଟ ବଜେଇବାଟା ତାଙ୍କର ଥୟ। ଲୋକେ କୁହନ୍ତି ତାଙ୍କ ଘଣ୍ଟ ବଜାରେ କୁଆଡ଼େ ଯାଦୁଥାଏ। ସତ କହିବାକୁ ଗଲେ ସେ ଯେମିତି ତନ୍ମୟ ହୋଇ ଘଣ୍ଟ ବଜାନ୍ତି ନା ମତେ ବି ଭାରି ଭଲଲାଗେ। ତାଙ୍କ ତୁଣ୍ଡରେ ତ ସବୁବେଳେ ତୁମ ନାମ। ଆଉ ରଥଯାତ୍ରା ସମୟରେ... ଆରେ ବାପ୍‌ରେ ବାପ୍, ତାଙ୍କ ଖୁସି ଆକାଶ ଛୁଉଁଥାଏ। ସ୍ନାନ ଯାତ୍ରାଠାରୁ ବାହୁଡ଼ା ଯାତ୍ରା ଯାଏଁ ବାପା ଗୋଟିଏ ଭିନ୍ନ ମଣିଷ ପାଲଟି ଯାଆନ୍ତି। ଖାଇବା ପିଇବାର ଠିକଣା ନ ଥାଏ। ଆଉ ଯାତ୍ରା ଦିନ ରଥ ଉପରେ ଏତେ ଭଙ୍ଗୀରେ ଏତେ ବାଗରେ ଘଣ୍ଟି ବଜାନ୍ତି ଯେ ଦେଖିବା ଲୋକ ମୁଗ୍ଧ ହୁଏ। ଆପଣାଛାଏଁ ଭକ୍ତି ଆସିଯାଏ ମନରେ। ଘଣ୍ଟର ତାଳେ ତାଳେ ସେ ବି ନାଚୁଥାନ୍ତି ବିଭୋର ହୋଇ। ହେଲେ ଏଭଳି ନିଛଳିଆ ଲୋକଟିକୁ ତୁମେ କାହିଁକି ଏତେ କଷ୍ଟ ଦେଲ ଯେ ସାଆନ୍ତେ... ତାହା ପୁଣି ତୁମ ଦେଉଳରୁ ଘଣ୍ଟ ବଜାଇ ସାରି ଫେରୁ ଫେରୁ। କହିଲ ଦେଖି, ଏମିତି କଥାରେ ମୋର ଅଭିମାନ ଆସିବାଟା କ'ଣ ଭୁଲ୍।

ସବୁଦିନ ପରି ସେଦିନ ମଧ୍ୟ ସଞ୍ଜ ଆଳତୀରେ ଘଣ୍ଟ ବଜାଇସାରି ଲଣ୍ଠନ ଧରି ଫେରୁଥିଲେ ବାପା। କୃଷ୍ଣ ପକ୍ଷ। କେମିତି କେଜାଣି ଇଟା ଖଣ୍ଡିକରେ ଝୁଣ୍ଟି ଗଛ କାଟିଲା ପରି କଚାଡ଼ି ହୋଇ ପଡ଼ିଗଲେ ସେ। ଚେତା ହଜିଗଲା। ପଛରେ ଆସୁଥିବା ସରବା ଦାଦି, ଘନ ଜେଜ, ନବାଇ ଆଦି ଧାଇଁ ଆସି ବାପାଙ୍କୁ ଝାଡ଼ିଝୁଡ଼ି ପାଣିଛାଟି ସାଷ୍ଟମ କରେଇଲେ। ଧରାଧରି କରି ଉଠେଇଲେ

ସିନା ବାପା ଆଉ ଚାଲି ପାରିଲେ ନାହିଁ। ଗୋଟେ ଗୋଡ଼ ତାଙ୍କ ଘୁଷୁରିଲା ଓ ଗୋଟେ ହାତ ବି ଚଳିଲାନି। ଟେକାଟେକି କରି ସେମାନେ ବାପାଙ୍କୁ ଘରକୁ ଆଣିଲେ। ବାପାଙ୍କର ଦୂରାବସ୍ଥା ଦେଖି ମା କାନ୍ଦିବୋବେଇ ଅଥୟ ହେଲା। ବାପାଙ୍କର କାତର ଆଖିରୁ ବି ଲୁହ ଝରୁଥିଲା ଧାରଧାର ହୋଇ। ବାପା, ମାଙ୍କ କାନ୍ଦ ଦେଖି ମତେ ବି ଭାରି କାନ୍ଦ ମାଡ଼ିଲା। ମୁଁ କବାଟ କଣରେ ଲୁଚି ଖୁବ୍ କାନ୍ଦିଲି। କାରଣ ମୋ କାନ୍ଦ ଦେଖିଥିଲେ ମା'ର ହୋସ୍ ଉଡ଼ି ଯାଇଥାନ୍ତା। ସମସ୍ତେ ଆମକୁ ବୁଝାବୁଝି କରି ଧୈର୍ଯ୍ୟ ଧରିବାକୁ କହି ଘରକୁ ଫେରିଗଲେ। ସେଇଦିନଠୁ ଆମ ଘରୁ ସୁଖ ନାମକ ଚିଜଟି କୁଆଡ଼େ ଗାଏବ୍ ହୋଇଗଲା। ନା ବାପା, ନା ମା କାହାରି ଆଖିରୁ ଲୁହ ଶୁଖୁ ନ ଥିଲା। ହସକୁରୀ ମା ମୁହଁରୁ ହସ ଲିଭିଗଲା। ମା ତାର ଗହଣା ବିକି ସରବା ଦାଦିଙ୍କ ସାଙ୍ଗରେ ବାପାଙ୍କୁ ସହର ପଠାଇଲା ଅଧିକ ଚିକିତ୍ସା ପାଇଁ। ହେଲେ ବାପାଙ୍କର ସେମିତି କିଛି ବିଶେଷ ଉନ୍ନତି ହେଲା ନାହିଁ। ବାପା ବାଡ଼ି ଧରି ସାମାନ୍ୟ ଚଲାବୁଲା କରିପାରୁଥିଲେ, ସେତିକି ଥିଲା ଭାଗ୍ୟର କଥା। ବାପା ଏବେ ମୁହଁ ଶୁଖାଇ ସାରାଦିନ ଘରେ ବସି ରହୁଛନ୍ତି। ଦେଖୁ ନ ସାଆନ୍ତେ, ଆଗଭଳି କାମ କରି ପାରୁ ନାହାନ୍ତି ବୋଲି ବାପା କେମିତି ଛଟପଟ ହେଉଛନ୍ତି। ଆମର କଷ୍ଟ ଦେଖି ଗାଁ ଲୋକେ ମା'କୁ ଅଙ୍ଗନବାଡ଼ି କେନ୍ଦ୍ରରେ ରୋଷେଇ କରିବାକୁ ରଖି ଦେଇଛନ୍ତି। ହେଲେ ସେଥିରେ କ'ଣ ଘର ଚଳେ? ମା ଉପରେ ଏବେ ବହୁତ କାମ। ଧେତ୍! ମୁଁ ଏତେବେଳକୁ ଆଉ ଟିକିଏ ବଡ଼ ହୋଇଯାଇଥାନ୍ତି କି? ମାକୁ ଆଉ ଏତେ କଷ୍ଟ କରିବାକୁ ପଡ଼ି ନ ଥାନ୍ତା। ହେଲେ ମୁଁ ତ ଏବେ ଷଷ୍ଠ ଶ୍ରେଣୀ ବି ପାସ୍ କରିନି। କିଛି ନ କରିପାରିବାର ଦୁଃଖରେ ବେଳେବେଳେ ମୋ ମୁଣ୍ଡ ଗୋଳମାଳ ହେଇଯାଉଛି। ତଥାପି ଯା ଭିତରେ ମୁଁ ନିଜକୁ ଖୁବ୍ ସଜାଡ଼ି ସାରିଲିଣି ସାଆନ୍ତେ। ନିଜ କାମ ନିଜେ କରୁଛି। ମା ଯାହା ଦଉଛି ସୁନାପିଲା ପରି ଖାଇ ଦେଉଛି। ମନଦେଇ ପାଠ ପଢୁଛି। ମା ନ ଥିଲାବେଳେ ଟିଉବ୍‌ୱେଲରୁ ପାଣି ଆଣି ଘରେ ସଜାଡ଼ି ରଖି ଦେଉଛି। ମତେ ଏବେ ନିଜକୁ ନିଜେ ଖୁବ୍ ବଡ଼ ଓ ଦାୟିତ୍ୱବାନ୍ ଲାଗୁଛି। ଯାହା ହେଲେ ବି ମୁଁ ଏ ଘରର ଗୋଟିଏ ବୋଲି ପୁଅ ନା। ମୁଁ ଯଦି ଦୁଷ୍ଟ କି ଅବୁଝା ହେବି ତେବେ ମୋ ବାପା ମାଙ୍କ ମନ ଦୁଃଖ ହେବ କି ନାହିଁ, କହିଲ ସାଆନ୍ତେ।

ହେଇଟି ଦେଖୁନ ସାଆନ୍ତେ, କହୁ କହୁ କ'ଣ ଗୁଡ଼ିଏ କହି ପକଉଲିଣି। ଏବେ ଅସଲ କଥାକୁ ଆସୁଛି। ଆଉ ଚାରିଟା ଦିନ ପରେ ତୁମର ପ୍ରସିଦ୍ଧ ରଥଯାତ୍ରା। ତୁମେ ରଥରେ ଚଢ଼ି ମାଉସୀ ମା ଘରକୁ ଯିବ। ବାପା, ଏତେବେଳକୁ ଯାତ୍ରା ପାଇଁ କେତେ ସଜବାଜ ହୋଇସାରନ୍ତେଣି। ହେଲେ ଦେଖୁନ ସାଆନ୍ତେ, କେମିତି ବିକଳିଆ ହୋଇ ମୁହଁ ଶୁଖେଇ ଖଟଟା ଉପରେ ପଡ଼ି ରହିଛନ୍ତି। ସବୁବେଳେ ଘରର ଶୂନ୍ୟ କାନ୍ଥଟିକୁ ଚାହିଁ କାନ୍ଦିବାରୁ ମୁଁ କିଛିଦିନ ତଳେ ଖଣ୍ଡେ ଅଙ୍ଗାରରେ ତୁମ ଛବି କାନ୍ଥରେ ଆଙ୍କି ଦେଇଥିଲି। ଛବିଟି ଦେଖି ବାପାଙ୍କର ଆନନ୍ଦ କହିଲେ ନ ସରେ। ମତେ କେତେ ଗେହ୍ଲାକରି ମୁଣ୍ଡ ଆଉଁସି ଦେଲେ। ଏବେ ତୁମର ରଥଯାତ୍ରା ପାଖେଇ ଆସୁଛି। ପୁଅ ହିସାବରେ ତାଙ୍କୁ ଟିକେ ରଥଯାତ୍ରା ନେବା ମୋର କର୍ତ୍ତବ୍ୟ କି ନାହିଁ, କହିଲ? ହେଲେ କେମିତି ନେବି ଯେ? ମୁଁ ସିନା ସାଇକେଲ ଫୁଲ ଚଲେଇବା ଶିଖିଗଲିଣି, ମାତ୍ର ସେ କ'ଣ ବସିପାରିବେ? ମତେ, କିଛି ବୁଦ୍ଧିବାଟ ଦିଶୁନି ହୋ ସାଆନ୍ତେ। ସରବା ଦାଦିଙ୍କୁ କହିଲେ ହୁଏତ ସେ କିଛି ଉପାୟ କରନ୍ତେ।

ହେଇଟି ସାଆନ୍ତେ। ବାପା କାଶିଲେଣି। ମୁଁ ଯାଉଛି। ମା ଟିକେ ବାହାରକୁ ଯାଇଛି ବୋଲି ମତେ ବାପାଙ୍କ ପାଖରେ ବସେଇ ଦେଇ ଯାଇଥିଲା। ବାପାଙ୍କ ଆଖି ଟିକେ ବୁଜି ହୋଇଯିବାରୁ ମୁଁ ତୁମ ପାଖକୁ ଚାଲି ଆସିଥିଲି ମୋ କଥା କହିବାକୁ। ଏବେ ଯାଉଛି, ହେଲା।

ବାପା ଶୋଇଛନ୍ତି ପୂର୍ବଭଳି। ହେଲେ ଏ କ'ଣ। ତାଙ୍କ ପେଟ ଉପରେ ଗୋଟିଏ କଳା ଜନ୍ଦା ଏପଟ ସେପଟ ହେଉଛି। ଧୀରେ କି ଜନ୍ଦାଟିକୁ ଝାଡ଼ିଦେଲି ତଳକୁ। ମା ବି ଆସିଗଲାଣି। ମୋ ଦାୟିତ୍ୱ ଶେଷ। ଯାଉଛି ସରଦା ଦାଦିଙ୍କୁ ବାପାଙ୍କୁ ରଥଯାତ୍ରା ଦେଖେଇ ନେବାକୁ କହିବି। ଦେଖିବା ସେ କ'ଣ କହୁଛନ୍ତି।

ଗୋଟେ ଡିଆଁରେ ସରଦା ଦାଦିଙ୍କ ଘରେ ପହଞ୍ଚିଗଲି। ସରଦା ଦାଦି କଟୁରୀଟେ ଧରି ନଡ଼ିଆରୁ କ'ଣ ଛଡ଼ଉଥିଲେ। ମୋତେ ଦେଖି ପାଖରେ ଥିବା ପିଢ଼ାଟିରେ ବସିବାକୁ କହିଲେ। ମୁଁ ସୁନାପିଲା ପରି ବସିଗଲି। କିଛି ସମୟପରେ ସାହାସ ବାନ୍ଧି ଦାଦିଙ୍କୁ, ବାପାଙ୍କୁ ରଥଯାତ୍ରା ଦେଖେଇନେବା ବିଷୟରେ କହିଲି। ମୋ ଆଗ୍ରହ ଦେଖି ବୋଧହୁଏ ନାହିଁ କରିପାରିଲେ ନି। କହିଲେ ହଉ ଦେଖିବା। ଇସ୍ ମୋ ହାତରେ ଜହ୍ନ ଖସିପଡ଼ିଲା କି ଆଉ। ମୁଁ ଜାଣେ, ସରବା ଦାଦି ମଙ୍ଗିଲେ ମାନେ ସେ ନିଶ୍ଚୟ ବାପାଙ୍କୁ ରଥ ଦେଖେଇନେବେ। ସେହି ମୁହୂର୍ତ୍ତରେ ମୁଁ ନିଜକୁ ତୁଳା ମେଞ୍ଚାଏ ପରି ଖୁବ୍ ହାଲ୍‌କା ମନେକଲି। ତା' ପରଠାରୁ ରଥଯାତ୍ରା ଯାଏଁ ମୁଁ ଏକ ବିଭୋର ପଣନେଇ ଘୁରି ବୁଲିଲି, ଆତ୍ମ ସନ୍ତୋଷରେ।

ରଥଯାତ୍ରା ଦିନ ଖୁବ୍ ଚଳଚଞ୍ଚଳ ଥିଲା ଆମ ଗାଁ। ଆଖପାଖ ଗାଁରୁ ବହୁତ ଲୋକ ଆସନ୍ତି ଆମ ଗାଁର ରଥଯାତ୍ରା ଦେଖିବାକୁ। ବାପାଙ୍କୁ ମୁଁ ଦେଖୁଥିଲି। ଖୁବ୍ ଦୁଃଖି ଓ ଅନ୍ୟମନସ୍କ ଲାଗୁଥିଲେ।

ମୁଁ ମଧ୍ୟ ମୋର ସୁପର୍ ପ୍ଲାନଟିକୁ ଘରେ କହି ନ ଥିଲି । ଠିକ୍ ସମୟରେ ସରବା ଦାଦି କେଉଁଠୁ ଏକ ହୁଇଲ ଚେୟାର ଯୋଗାଡ଼ କରି ଘରେ ପହଞ୍ଚିଗଲେ । ହୁଇଲ ଚେୟାର ତ ନୁହେଁ ମୋତେ ଲାଗୁଥିଲା ସତେଅବା ପୁଷ୍ପକ ବିମାନଟିଏ । ମୋ ବାପା ଏଥିରେ ବସି ରଥ ଦେଖିବାକୁ ଯିବେ। ମନେମନେ ଦାଦିଙ୍କୁ କୋଟି ମୁଣ୍ଡିଆ ମାରିଲି। ସମସ୍ତେ ଧରାଧରି କରି ବାପାଙ୍କୁ ଚେୟାର୍‌ଟିରେ ବସେଇ ଚାଲିଲୁ ରଥ ଦେଖିବାକୁ। ଗୋଟିଏ ପ୍ରଶସ୍ତ ଜାଗାଦେଖି ଦାଦି ଆମକୁ ଠିଆ କରେଇଦେଲେ । ସେ ଚାଲିଗଲେ ରଥ ପାଖକୁ। ମା ଓ ମୁଁ ବାପାଙ୍କୁ ଜଗି ସେଇଠି ଠିଆହେଲୁ । ରଥବାନା ଦିଶୁଥାଏ । କିଛି ସମୟପରେ ରଥଆସି ପହଞ୍ଚିଯିବ ଆମ ପାଖରେ। ଧୀରେ ଧୀରେ ରଥ ବଢୁଥିଲା ଆଗକୁ । ଘଣ୍ଟ, ଘଣ୍ଟା, ହୁଳହୁଳିରେ ଫାଟି ପଡୁଥିଲା ଚଉଦିଗ । ରଥ ଘର୍ଘର ନାଦରେ ଗଡ଼ି ଚାଲିଥାଏ। ହେଇ ତ ରଥ ଆମ ପାଖାପାଖି ହେଇ ସାରିଲାଣି। ସାଆନ୍ତେଙ୍କ ଚକାନୟନ ସ୍ପଷ୍ଟ ହେଲାଣି । ବାପାଙ୍କ ମୁହଁରେ ଖୁସିର ଝଲକ। ଆଃ ! ମୋର ତ ଏତିକି ଦରକାର ଥିଲା ।

ହଠାତ୍ କ'ଣ ହେଲା କେଜାଣି ରଥ ଆମ ଆଡ଼କୁ ମାଡ଼ି ଆସିଲା ଘଡ଼ ଘଡ଼ ହୋଇ । କିଏ କୁଆଡ଼େ ଛିନ୍‌ଛତ୍ର ହେଇଗଲେ । ହୋ ହାଲ୍ଲା ଭିତରେ ମୁଁ କୁଆଡ଼େ ଛିଟିକି ପଡ଼ିଲି ମୁଁ ନିଜେ ମଧ୍ୟ ଜାଣି ପାରିଲିନି । ଆଖି ଖୋଲିଲା ବେଳକୁ ଦେଖିଲି ବାପା ବସିଥିବା ଜାଗାଟି ପାଖରେ ଲୋକ ରୁଣ୍ଡ ହୋଇଛନ୍ତି । ରଥଟି ସେଇଠି ଅଟକି ଯାଇଛି । ମୋ ମୁଣ୍ଡ ଘୁରେଇ ଦେଲା । ତାମାନେ ମୋ ବାପା କ'ଣ ରଥଚକ ତଳେ... । ଆଗକୁ ଆଉ ଭାବି ପାରିଲିନି । କାନ୍ଦି କାନ୍ଦି ଭିଡ଼ ଅଡ଼େଇ ଭିତରେ ପଶିଲି । ହୁଇଲ ଚେୟାର୍‌ଟି ଚିତ୍‌ପଟାଙ୍ଗ ହୋଇ ପଡ଼ିଥିଲା କିଛି ଦୂରରେ। ରଥ ଆଗରେ ବାପା ଦୁଇବାହୁ ଉର୍ଦ୍ଧ୍ୱକୁ ଟେକି ଚୈତନ୍ୟଙ୍କ ପରି ନାଚି ଚାଲିଥିଲେ ଭାବାବେଗରେ । ସମସ୍ତଙ୍କ ଜୟଜଗନ୍ନାଥ ଧ୍ୱନିରେ ପ୍ରକମ୍ପିତ ହେଇଉଠୁଥିଲା ଚଉଦିଗ। ଏପରି ଏକ ଅଲୌକିକ ଦୃଶ୍ୟ ସମସ୍ତଙ୍କୁ ଆଚମ୍ଭିତ କରିଥିଲା। ପ୍ରଭୁଙ୍କର ଏ କି ଦିବ୍ୟଲୀଳା। ମା' ଆନନ୍ଦ ଅତିଶଯ୍ୟରେ ଭୂଇଁରେ ଲୋଟି ସାଆନ୍ତେଙ୍କୁ ମୁଣ୍ଡିଆ ମାରୁଥିଲା। ନିମିଷକେ ମୋ ଅଭିମାନ କୁଆଡ଼େ ମିଳେଇଗଲା। ସାଆନ୍ତେଙ୍କୁ କ୍ଷମା ମାଗି କହିଲି- ସାଆନ୍ତେ କ୍ଷମା କରିଦିଅ। ଆଜିଠାରୁ ସାରାଜୀବନ ତୁମ ସାଙ୍ଗରେ ମୋର ମିଟି । ଏତିକିବେଳେ ସରବା ଦାଦି କେଉଁଠୁ ଗୋଟିଏ ଘଣ୍ଟ ଆଣି ବାପାଙ୍କୁ ଧରେଇ ଦେଲେ । କିଛି ଲୋକଙ୍କ ସହାୟତାରେ ବାପା ରଥ ଉପରକୁ ଚଢ଼ି, ଝୁଲି ଝୁଲି ଘଣ୍ଟ ବଜେଇବାକୁ ଆରମ୍ଭ କଲେ- ଡାଇଁ ଡିଡାଇଁ ଡାରଁ ଡାଁ

ଡାଇଁ ଡିଡାଇଁ ଡାରଁ ଡାଁ ।

ଦାମନଯୋଡ଼ି

ପ୍ରେମ କେବେ ସରେନା

ସ୍ନେହମୟୀ ସାହୁ
ଅନୁଗୁଳ

ପ୍ରେମର ଗୋଟିଏ ପାଦ ଆଲୁଅରେ
ତ ଆର ପାଦଟି ଅନ୍ଧାରରେ ।
ପ୍ରେମର ପେଣ୍ଡୁଲମ
ଅନବରତ ଦୋହଲୁଥାଏ,
କେବେ ଥାଏ ପୂର୍ବରେ ତ
କେବେ ପଶ୍ଚିମରେ ।
ପ୍ରେମ ସରେନା, ଋତୁ
ବଦଳିଲେ ସଁବାଳୁଆର ଖୋଳପା ଛାଡ଼ି
ଉଡ଼ିଆସେ ନୂଆ ଏକ
ଚିତ୍ରିତ ପ୍ରଜାପତି ।
ପ୍ରେମ ସରେନା ବୋଲି ସବୁଠି
ତୁଷାରପାତ ହେଉଥିବାବେଳେ
ପ୍ରେମୀର ଘର ସାମ୍ନାରେ ଫୁଟିଥାଏ
ବେସୁମାରି ଫୁଲ ଓ ଗଛ ଡାଳରେ
ବସି ନିରୋଳାରେ ପକ୍ଷୀଗାଉଥାଏ ଗୀତ ।
ପ୍ରେମ ସରେନା ବୋଲି ତ
ସତେଇଶି ବର୍ଷ
ତଳେ ଛାଡି ଆସିଥିବା
ପ୍ରେମକୁ ହୃଦୟରେ
ସାଇତି ରଖିଛି ମୁଁ !!!

ନାରୀ

ଏକ ନିଅଣ୍ଟ ସକାଳ

ଜଳଧର ସ୍ୱାଇଁ

ମୁଁ ବାଟ, ମୁଁ ଅବାଟ
ମୋତେ କିଏ
ଏଡ଼େଇ ପାରିଛି ଚାଲି
ଦୁନିଆ ଦାଣ୍ଡରେ
ମୋତେ କିଏ କେଉଁଠି
ଯାଇଛି ବା ଅତିକ୍ରମି
ଆପଣା ପଣରେ ॥

ଜୀବନକୁ ଜୀଇଁବା
ଶିଖିଛି ବୋଲି
ମୁଁ ନଈ ମୁଁ ନିଆଁ
ମୁଁ ତ ନାଉରୀ
ଯେତେଥର ଜଳିଛି
ସେତେଥର ବି ଜାଳିଛି
ଦର୍ପ ଦମ୍ଭ ଅହଂକାରେ ଭରା
ସ୍ୱର୍ଣ୍ଣମୟୀ ଲଙ୍କାର ନଗରୀ ।

ମୁଁ ବିଶ୍ୱାସ ବିଶ୍ୱରୂପ
ମୁଁ ଅନ୍ଧାର, ମୁଁ ଆଲୋକ
ମୃତ୍ୟୁଠୁ ଜୀବନ
ଫେରେଇ ଆଣିବାରେ
ସକ୍ଷମ ମୁଁ
ମୁଁ ଶିଳା ଶାଳଗ୍ରାମ
ମୁଁ ବଜ୍ର କୀଟ ।

ଯେତିକି ଅନ୍ଧାର
ସେତିକି ଆଲୁଅରେ
କରିଛି ମୁଁ ଘର
ମୁଁ ନାରୀ ନିଅଣ୍ଟ ସକାଳ
ଯେତିକି ପିଇଛି
ଯନ୍ତ୍ରଣାର ହଳାହଳ
ସେତିକି ଅମୃତବାଣ୍ଟି
ଲୋଡ଼ିଛି ମୁଁ
ଆପଣାର ପଣ ।

କୋରାପୁଟ

ଗ୍ରୀଷ୍ମଋତୁ

କମଳ ସାହୁ

ଗ୍ରୀଷ୍ମ ଋତୁକୁ ସାଙ୍ଗରେ ନେଇ
ଭୋଟ ଋତୁ ଆସିଲା ଧାଇଁ ।
ଆକାଶେ ଥାଇ ସୂରୁଜ ଖାଲି,
ବରଷେ ନିଆଁ ଡହକେ ବାଲି ।
ନେତାଙ୍କର ପୁଣି ତୁହାକୁ ତୁହା,
ଭାଷଣ ବର୍ଷନ୍ତି ହଲାଇ ବାହା ।
ଯୋଜନା ମାନ ଯେ କେତେ ରକମ,
ଜନତାଙ୍କୁ କିଛି ଦେଉନି କାମ ।
ଶୁଖେ ସିନା ନଈ ନାଳ ପୋଖରୀ,
ହେଲେ ଟଙ୍କା ଝଡୁଥାଏ ଆଟାଚି ଭରି ।
ପାଚଇ ଆମ୍ବ, ପଣସ, ତାଳ
କାଦୁଅ ଫିଙ୍ଗାରେ ନେତା ଅସମ୍ଭାଳ ।
କୋଇଲିର ଗୀତ କି ମନୋହର,
ଫିଲ୍ମିଷ୍ଟାରଙ୍କ ଭୋଟ ପ୍ରଚାର ।
ଚୁଡ଼ାକୁ ଗୁଡ଼ ଓ କଦଳୀ ଦହି,
ଜନତା ମନଟା କେ ପାରେ କହି ।
ଝାଞ୍ଜିରେ ନେତାଙ୍କ ହଜିଲା ନିଦ,
କାମ କରୁନି ଯେ କୁକୁଡ଼ା ମଦ ।
ପଖାଳ ମଜାଟା ବହୁତ ଜମେ,
ଭୋଟ ଦେଇ ନେତା ବାଛିବା ଆମେ ।
ବରଷା ଆସିଲେ ଗରମ ଛୁଉ - ଉ -,
ଭୋଟ ସରିଲେ ନେତାଏ କୁ - ଉ - ଉ ।

ଅନୁଗୁଳ

ଫେରାଇ ଆଣରେ

ବିଷ୍ଣୁ ପ୍ରସାଦ ମିଶ୍ର

ହଜୁଛି ଉତ୍କଳ ପୂରୁବ ସଂସ୍କୃତି
ନବ ସଭ୍ୟତାର ବଳେ,
ଭବ୍ୟତା ବୋଲିବା କିଏ ପଚାରୁଛି
ଭାବ ହୀନ ଭାଷା ଛଳେ,
ପ୍ରକୃତିର ରୂପ ବିକୃତି ସାଜିଛି
ମାନବ ସ୍ୱକୃତି ପାଇଁ,
ବିଜ୍ଞାନ ସୁଜ୍ଞାନେ ଅଜ୍ଞ ଚେତନାରେ
ସ୍ୱଜ୍ଞାନ କୌଶଳ ନେଇ
ହୀତଜ୍ଞାନ ଆଜି ମର୍ମହୀନ ହୁଏ
ମୋହ ଜଡ଼ିତର ଫଳେ,
ଜାଗରୀତ ସର୍ବେ ସ୍ୱତଃ ମନ ଗର୍ବେ
ଧନ ପଦବୀର ଭୋଳେ,
ସଞ୍ଚିତ ଯା ଖାଲି କର୍ମ ପଥ ଧାରେ
ବଞ୍ଚିତ କାଲିର ପାଇଁ

କଳା ବୋଲି ଯାହା କଳାକାରି ପାଶେ
କଳାକାର ଏଠି ଶୁନ୍ୟ,
ନାଟକ କରିବା ସଭିଙ୍କର ଇଚ୍ଛା
ମଞ୍ଚ ଖାଲି ଭିନ୍ନ ଭିନ୍ନ
ଭାଷା, ଚଷା, ଯୋଶା, ଶୂନ୍ୟ ପଦବୀରେ
ମହତ ପଣିଆ ବୋଲି,
ସହନତାହୀନ ସଞ୍ଜମତା ଲୀନ
ଲଜ୍ଜା ତ ଗଲାଣି ଚୁଲି,
ପୁରୁବ ଗୌରବ ପୁରୁବ ମାନ୍ୟତା
ସଭ୍ୟ ଶୁନ୍ୟ ଗ୍ରନ୍ଥାଗାରେ,
ପନ୍ଥା, ଜାତି ନୀତି ନିୟମ ହଜିଛି
ଆଧୁନିକ ସମାଜରେ,
ମଜ୍ଜାରେ ଉଡ଼ାଇ ଭାବ ବଢ଼ିମାରେ
ଭାଷା ବିକଳାଙ୍ଗ କରି,

ବିକଳ ଚିତ୍କାର କିଏବା ଶୁଣୁଛି
କାନ ଥାଇ କାଲପରି,
ପ୍ରତାରଣା ଏଠି ମନରେ ମନକୁ
ମାନବିକତାର ମାନ୍ୟେ,
ପରାଣ ଆତଙ୍କ, ଘାତକ ଶୂନ୍ୟତା
ସନମାନ ପଦ ପଣେ,
ପରଶଂସା ପଦେ ଅଧିକାର ମୋଦେ
ମନର ଗରବ ସାଥେ,
ସଂସ୍କାର ସଂସ୍କୃତି ଉଚ୍ଛେଦିତ ହୁଏ
ଅପଭ୍ରଂଶତାର ପଥେ,
ଫେରାଇ ଆଣ ରେ କଳା ସଂସ୍କୃତିର
ସଂସ୍କାର ଜ୍ଞାନର ପଣ,
ଭୀରୁ କିଆଁ ଆଜି ପୂରୁବ ଗୌରବେ
ହୋଇ ଉତ୍କଳ ସନ୍ତାନ

କୋରାପୁଟ

स्वच्छ रहें हम

इतिश्री साहू

स्वस्थ रहें हम
यही हमारा नारा।
स्वर्ग से सुंदर देश हो अपना
सारे जग से न्यारा ।
निर्मल हो नदियाँ इसकी,
सुंदर हो गलियाँ इसकी,
साफ स्वच्छ हो हर आँगन,
पुलकित हो बगिया इसकी ।

स्वच्छ हवा में साँस भरें हम,
उर्वर माटी में फले - फूलें हम,
जन्मभूमि को गर्वित कर,
कण - कण इसका महकाएँ हम।
स्वच्छ रहें हम, स्वस्थ रहें हम,
यही हमारा नारा।

केन्द्रीय विद्यालय, भुवनेश्वर-३

ସ୍ମୃତି...

ସବିତା ଶତପଥୀ

କାହା ପାଇଁ ସ୍ମୃତି
ଉଜୁଡ଼ା ସ୍ୱପ୍ନର ଭଗ୍ନ ପାନ୍ଥଶାଳା
ପୁଣି ରଙ୍ଗହୀନ ରଙ୍ଗଶାଳା
ଶେଷ ବସନ୍ତର ଅକୁହା ବିନତି
କେବେ ହତାଶାର ଅମାରାତି
ମୋ ପାଇଁ କିନ୍ତୁ
ଅସରନ୍ତି ପ୍ରୀତିଗୀତି
ଏକ ମନଲୋଭା ପ୍ରଜାପତି
ଯିଏ ଆନମନା କରେ ନିତି... ।

କାହା ପାଇଁ ସ୍ମୃତି
ବେଦନା ବିଧୂରା ଅଭିଶପ୍ତ ଶିଳାଲିପି
ମରମ ତଳର ଗହନ କାନନେ
ମୁଦ୍ରିତ କଳାକୃତି
ଏବେ ଅଲୋଡ଼ା ସାଇତା ପୋଥି
ମୋ ପାଇଁ କିନ୍ତୁ
କାରୁକାର୍ଯ୍ୟ ଭରା ମନ୍ଦିର ମୁଖଶାଳା
ପ୍ରଭାତର ଶୁଭଘଣ୍ଟି
ଯିଏ ଆନମନା କରେ ନିତି... ।

କାହା ପାଇଁ ସ୍ମୃତି
ବାସି ସକାଳର
ସନ୍ଦେହୀ ରଙ୍ଗଣୀ ଫୁଲ
ତପ୍ତ ହୃଦୟେ ଜଳି ଉଠୁଥିବା
ଅଲିଭା ନିଆଁର ଝୁଲ
ପୁଣି ନୀଳ ପ୍ରଣୟରେ
ନୀଳ ପ୍ରତାରଣା ଗୀତି
ମୋ ପାଇଁ କିନ୍ତୁ
ପ୍ରେମର ନୈବେଦ୍ୟ
ପହିଲି ଭୋଗର କୋଟିନିଧି ସମତୃପ୍ତି
ହୃଦୟେ ବିଶ୍ୱାସ ଚନ୍ଦନେ ଚର୍ଚ୍ଚିତ
ଶ୍ରୀରାଧାଙ୍କ ଯୁଗଳ ମୂର୍ତ୍ତି
ଯିଏ ଆନମନା କରେ ନିତି... ।
କାହା ପାଇଁ ସ୍ମୃତି
ଯାତନାର ଜୁଇ
ଶବଯାତ୍ରାର ଫିଙ୍ଗାଖଇ
ପୁଣି ଉଦାସ ରାତିରେ
ନିଦ ହଜିଥିବା ଓଦା ଓଦା ଆଖି ଦୁଇ
କେବେ ଝଡ଼ ତୋଫାନର ଭୀତି
ମୋ ପାଇଁ କିନ୍ତୁ
ଚଉରା ମୂଳରେ
ନିତି ଜଳୁଥିବା ସଞ୍ଜବତୀ
ଏକ ଯଜ୍ଞର ପୂର୍ଣ୍ଣାହୁତି
ଯିଏ ଆନମନା କରେ ନିତି... ।

କୁନ୍ଦ୍ରା, କୋରାପୁଟ

संगिनी KHANA KHAZANA

Imli ka Achar

Abhineeta Singh

After a long time I visited my parental home during Summer. My Dad's meal is never complete without chutney / achar. He says chutney and achar are accessories of a platter which complete the food. My Dad asked me to make some pickle for him. I prepared Imli ka achar, Aam ka achar, Hari mirch - lahsan - adrak ka achar aur Aam lahsun ka achar for him. Here I share the recipe Imli ka achar which I tried being inspired by the tribal cuisine of Odisha.

INGREDIENTS

Tamarind with seeds - 1kg
Jaggery - 1+1/2 kg
Fennel seeds - 3 tbsp
Cumin seeds - 3 tbsp
Fenugreek seeds - 2 tbsp
Chilly powder - 1 tsp
Whole red chillies - 25 gms (optional)
Black salt - 1 tsp
Common salt - 1 tsp
Mustard oil - 1 cup
Water - 2 cup

METHOD

1. Heat a heavy bottom pan on medium heat. Now dry roast fennel seeds, cumin seeds and fenugreek seeds one by one for 1-2 minutes or till the colour starts to change and a little aroma comes out.
2. Let it cool down under fan, then make fine powder in mixer grinder on medium to high speed. Let the powdered spices naturally.
3. Meanwhile heat mustard oil on high flame till smoke comes out. Allow it to cool down naturally.
4. Heat 2 cups water in a heavy bottom deep pan/ kadai on medium heat. Break jaggery in to small pieces and add it to water. Stir very well. Now increase the heat to high flame. Add whole chillies while making jaggery syrup.
5. Make one sting syrup on high flame and stir several times while cooking to save from burning.
6 Now add all spices as chilli powder, cumin powder, fenugreek powder, fennel powder, both common & black salt, mustard oil and cook for 8 -10 minutes on low heat so that the flavours combine together. Switch off the gas stove.
7. Now it's time to add tamarind. Separate tamarind carefully then put it in the jaggery syrup and stir several times but gently.
8. Keep this pot in the sunlight for 3 -5 days according to the requirement of temperature. Gradually, tamarind will absorb the syrup and become soft and juicy.
9. After 3-5 days let it cool down naturally. Now keep the tamarind pickle in a clean and dry airtight glass jar. This pickle lasts for 1-2 years undoubtedly.
10. Enjoy this sweet, sour and spicy pickle with any type of poori, paratha and chapati may it be breakfast, lunch or dinner. Enjoy it as a mood freshener too anytime, anywhere.

Nalconagar, Bhubaneshwar

संगिनी INTER VIEW

NALCO'S BUDDING TALENTS

It gives immense pleasure to introduce our dream girls Adyasha and Irmeen, two budding talents of Nalco family who have punched their way up the success table displaying multitalented creativity. Adyasha is the daughter of Mr Pramod Kumar Behera, Dy. General Manager (Mechanical), Corporate Office, while Irmeen is the daughter of Mr Rasheed Waris, Dy. General Manager (Mechanical), M&R Complex of NALCO.

ADYASHA BEHERA

Sanginee: Hi ! Greetings from Sanginee. It's heartening to know about the budding talents in the Nalco family and do our bit to encourage creativity. Talking to you is a pleasure as your dream is ringing a wake up call.

Adyasha : My name is Adyasha, elder by 2 minutes to my twin sister Priyasha. My father, Mr. Pramod Kumar Behera works as Dy. General Manager, NALCO. My mother, Mrs. Sarita Behera, is a homemaker who takes care of our family. I was born in Nalco Nagar, Angul, however we shifted to Bhubaneswar a few years back.

Sanginee: W.H. Murry, the Scottish mountaineer says, "Whatever you can do or dream you can begin it. Boldness has genius, power and magic in it. Will you highlight on your magical beginning ?

Adyasha: I graduated as an Instrumentation & Electronics Engineer last year. I wanted to pursue my interest that was Literature. So after Degree, I was truly passionate to go for it. But you know with technical background competing with thousands of students of humanities for Masters through competitive exams is not that easy. However I am extremely lucky to be selected for the course of Masters in Society and culture offered by IIT Gandhinagar which had only 40 seats. I guess the interview panel must have seen the fire in me to pursue my dream that I miraculously scored the first name on their selection list.

I know that's a different career altogether. But isn't that what dreams are?

Sanginee: Of Course, But, When did you discover your inclination towards writing ?

Adyasha: In the initial days writing was about us asking mother to give a muse that we could take inspiration from. I remember once we scribbled something sitting in the boot of our car, looking at the trees or anything random that passed.

Sanginee: What were your earliest compositions?

Adyasha: The first piece of poetry that I wrote was about Santa Claus, if I am not wrong. I don't remember it though. It was mostly assemblage of complete randomly thrown words which had a rhyming end to it.

Sanginee: What are you inspired to write about generally? And what genre?

Adyasha: I started my writing journey with poetry, then moved on to simpler poetry next. The first story I wrote was in class 12th titled, 'The Diary of a Baby Girl', which further went on to be my father's favourite. After being familiar to writing poetry and short prose, I am prepping myself to dive into the deeper waters of the Novel.

Sanginee: We would like to know about your achievements in this line of creativity. Please highlight on these.

Adyasha: My write-ups didn't actually get much appreciation during my schooling days. It was at times frustrating that I took a leave from writing for nearly 4-5 years. I have absolutely neither awards nor achievements in the field of writing, until I was in my third year when I wrote my first book in a matter of couple of days. The book titled "Flawless Covet" is available on AMAZON and other sites.

Sanginee: Today, there's a big scope for writing with the internet opening up a plethora of opportunities. Do you think, this can be a fruitful career for budding writers like you?

Adyasha: There is so much more to writing than publishing books. There is so much that can be done by us, the writers. Be it preserving the history and mythology of our country or to help ignite younger minds. With the growing audience who wish to read, be it on a digital forum or through the traditional method of books, it is a never ending brain storming for writers to bring something new and creative for them.

Sanginee: How do you think as a writer you can contribute to the self and the society?

Adyasha: I belong to a partly younger generation of writers, an age when it's easier to speak and make all the difference. Writers like me, can contribute so much towards society, be it to our literary world, or to

preserve the culture that might get lost in the pages of time.

It is said, a writer holds the power to eternity, the power to make things eternal. I wanted to contribute to the rich culture of my country by helping my fellow writers to etch it in the eternal pages of time.

I remember the expression of my interview panel, during my interview at IIT Gandhinagar, when they asked me, why this after engineering when I could easily have opted to continue with my career as an engineer? What was I aiming to achieve at the end? And both of them were amazed as well as shocked at my answer.

Sanginee: How do you balance the two contradictory passions in your life ... a career in engineering and inclination towards writing? Don't they ever clash as very opposite interests?

Adyasha: Most engineers are the best writers, like Chetan Bhagat or Durjoy Datta from our younger generation. I have met many engineers who are creative this way. I do acknowledge, both the career lines might never cross each other in future but can complement each other.

Let's just hope and wait for the future to reveal itself?

Sanginee: Well said, Adyasha. Lastly, what advice would you give to young writers of your age to motivate them to pursue this line of creativity?

Adyasha: The only thing I would say is, to always work on yourself. Strengthen your knowledge, polish your skills everyday. If you happen to be as passionate as me, you can do crazy stuff too, but the end must be towards your dreams and goal in life.

Sanginee : Absolutely Thank you, Adyasha. We, from the Ladies Club and the Nalco fraternity would like to wish you great success in achieving your dreams and may the pen from your fingers add to the richness of literature and society. Thank you.

IRMEEN HABEEB

Sanginee: Hi. Irmeen! Thank you for agreeing to do this discussion. Please tell us about yourself.

Irmeen: My parents, Mr. Rasheed Waris and Mrs. Nadira Khan, are working in Nalco, Damanjodi. I have just completed my Class 10 from Delhi Public School, Damanjodi.

Sanginee: What prompted you to become a poet? Who inspired you?

Irmeen: My sister and mother have inspired me. Both of them used to write when I was a small child. Poems taught at school used to be a great fascination to me.

Sanginee: What are the topics of interest?

Irmeen: Current social, political and environmental issues are my topics of interest.

Sanginee: What was your first creation?

Irmeen: A poem named *'Ye Bagh bechara Kya Jaane'* was my first poem.

Sanginee: What are your achievements?

Irmeen: I secured first position in *Kavi Sammelan* and Hindi poetry writing competitions.

Sanginee: What do you aspire to be? Will you consider making writing your career?

Irmeen: I aspire to be a lawyer in future and I would continue to write poetry as a hobby.

Sanginee: At every point of time, artists & writers are instrumental in changes in the world. Are your writings going to have an impact on the society?

Irmeen: Yes, I hope my poems will be among the catalysts of change.

Sanginee: In the age of internet, don't you think you should write in English not in Hindi?

Irmeen: Though I do write in English, I think I can express myself in the truest sense in Hindi as it is very close to my mother tongue. The Internet is coming up with opportunities for Hindi writers. There are many blogs maintained by people who have a taste for Hindi literature.

Sanginee: How do your parents & family members react to your writings?

Irmeen: My parents and family members have always encouraged and supported me. They give me ideas too.

Sanginee: Do you think you are an inspiration for all those creative minds in your school & in vicinity?

Irmeen: Maybe. My classmates and juniors come to show their poems to me and often seek advice.

Sanginee: We wish you all the best in your endeavours, Irmeen. Thank you.

अकेला हूँ ये सोचकर रुक नहीं जाना
तु चलकर देख, तेरे साथ पूरा कारवाँ होगा।
ज़मीं को नापना है, ये सोचकर पहला कदम रख
फिर तेरे पास पूरा आसमाँ होगा।

Nalco Mahila Samiti, Bhubaneswar has been rendering social services in and around Bhubaneswar. Similarly, Nalco Ladies Clubs at Damanjodi and Angul are also actively contributing their services in and around the plants and townships. It has been the endeavor of these bodies to reach out to the people of all age groups of all sections of our society. Here is a glimpse of activities and achievements of NMS.

At Bhubaneswar

Saying "Adieu" to Smt. Nivedita Acharya

Release of Sanginee April-June Issue with CMD & Directors of NALCO - Team Sanginee

Jalchhatra infront of Nalco Bhavan (जल दान - श्रेष्ठ दान)

NMS at SOS Village - Relief for the relief of
cyclone affected people

International Yoga Day celebration -
Yoga for Health & Peace

Plantation by NMS on Wold Environment Day

Plantation by NMS on Vana Mahotsav
- Be an umbrella to protect the environment

Releief distribution at Somnath Basti
Adding smile is equivalent to adding life

Relief distribution at Leprosy Colony, Jatni
Reaching out to most unreached people

Celebration of Raja festival at Community centre - Preserving cultural heritage

At Damanjodi

Sawan Celebration- सावन के रंग मधुर

Vana Mahotsaba - Plant Trees, Plant Life

Celebration of International Yoga Day
Yoga Every Day - Keeps the Doctor Away

At Angul

Hands that rock the world with their help

Smt. Mamata Mishra, President -
We don't say Good Bye, We say remain in heart

Stand together - Serve together

Celebration of World Environment Day

Our culture - Our strength

Preserving customs & traditions

Celebration of International Yoga Day

Readers are requested to send their suggestions and feedback to **nmssangini@gmail.com**.
Write ups in clear handwriting or soft copy should reach the Coordinator before 10th September 2019. **- Editor**

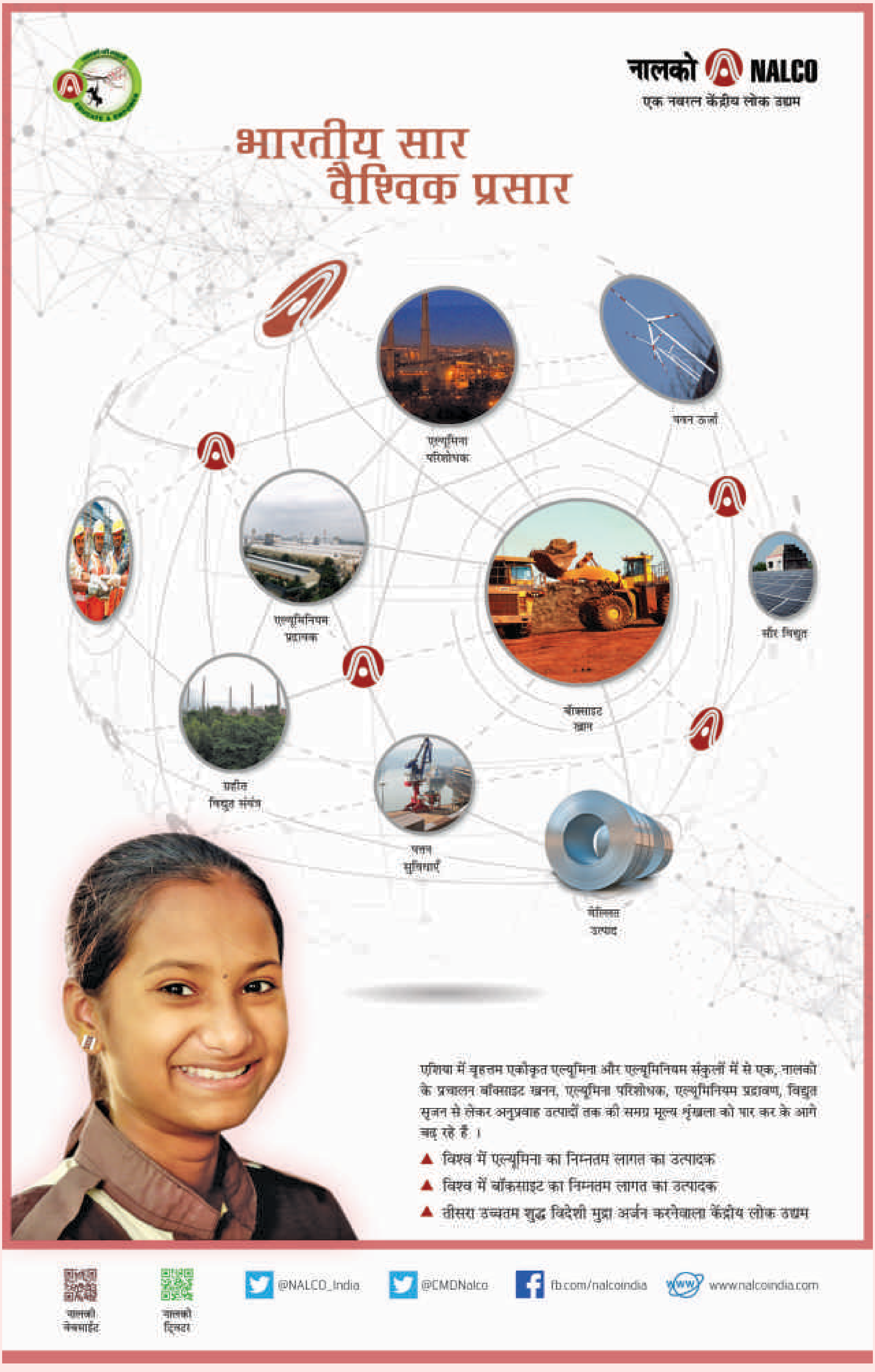
नालको NALCO
एक नवरत्न केंद्रीय लोक उद्यम
भारतीय सार
वैश्विक प्रसार
एल्यूमिना परिशोधक
पवन ऊर्जा
एल्यूमिनियम प्रद्रावक
सौर विद्युत
बॉक्साइट खान
ग्रहीत विद्युत संयंत्र
पत्तन सुविधाएँ
बेल्लित उत्पाद
एशिया में वृहत्तम एकीकृत एल्यूमिना और एल्यूमिनियम संकुलों में से एक, नालको के प्रचालन बॉक्साइट खनन, एल्यूमिना परिशोधक, एल्यूमिनियम प्रद्रावण, विद्युत सृजन से लेकर अनुप्रवाह उत्पादों तक की समग्र मूल्य शृंखला को पार कर के आगे बढ़ रहे हैं ।
▲ विश्व में एल्यूमिना का निम्नतम लागत का उत्पादक
▲ विश्व में बॉक्साइट का निम्नतम लागत का उत्पादक
▲ तीसरा उच्चतम शुद्ध विदेशी मुद्रा अर्जन करनेवाला केंद्रीय लोक उद्यम
नालको वेबसाइट
नालको ट्विटर
@NALCO_India
@CMDNalco
fb.com/nalcoindia
www.nalcoindia.com